

एकदेशस्थितमपि यथा मातृ ० इन्द्राण्डकम् ।
 दृश्यते सर्वं सर्वैः काश्यां विश्वेश्वरस्तथा ॥१३२॥
 (का० खं. अ० २६)

अर्थ:- जैसे सूर्य एक ठाँव पर देवों में स्थित
 भी सभी लोगों से सर्वथा देखा जाता है, उसी
 प्रकार काशी में विश्वेश्वर से सभी भक्त मिल
 जाते हैं।

बहुपसर्गा योगादयं कृच्छ्रसाध्यन्तपो हि यत् ।
 योगाद् भूतस्तपो भूतो गर्भकेशराहः पुनः ॥१४०॥
 (का० खं. अ० २६)

अर्थ:- योग में बहुत विघ्न है, तपस्या कष्ट साध्य
 है। योग से भूत, तप से भूत होकर फिर गर्भवास
 केश सहता है।

भूमिण्ठमिव भात्येतद्वा दृष्ट्या दमतादिवत् ।
 मत्स्वरूपं ज्ञानदृशां भाति सत्यं वंदे प्रिये ॥
 ()

अर्थ:- भूखे की दृष्टि से यह पृथ्वी पर ठहरी हूँ
 की भाँति मालूम होती है, परन्तु ज्ञान दृष्टि से
 वालों को यह काशी समुदादि की भाँति है। हे
 प्रिये! मैं सत्य कहता हूँ जैसा स्वरूप ज्ञान दृष्टि
 वाले ही देख सकते हैं तथा जान सकते हैं।

1890

1. The first part of the paper is devoted to a general discussion of the problem of the existence of a solution of the system of equations (1) for arbitrary values of the parameters α and β . It is shown that the system has a solution for arbitrary values of the parameters α and β if and only if the condition $\alpha + \beta = 1$ is satisfied.

1897-10-15

$\frac{1}{2}$

1. 1950-1951
2. 1951-1952
3. 1952-1953
4. 1953-1954
5. 1954-1955
6. 1955-1956
7. 1956-1957
8. 1957-1958
9. 1958-1959
10. 1959-1960
11. 1960-1961
12. 1961-1962
13. 1962-1963
14. 1963-1964
15. 1964-1965
16. 1965-1966
17. 1966-1967
18. 1967-1968
19. 1968-1969
20. 1969-1970
21. 1970-1971
22. 1971-1972
23. 1972-1973
24. 1973-1974
25. 1974-1975
26. 1975-1976
27. 1976-1977
28. 1977-1978
29. 1978-1979
30. 1979-1980
31. 1980-1981
32. 1981-1982
33. 1982-1983
34. 1983-1984
35. 1984-1985
36. 1985-1986
37. 1986-1987
38. 1987-1988
39. 1988-1989
40. 1989-1990
41. 1990-1991
42. 1991-1992
43. 1992-1993
44. 1993-1994
45. 1994-1995
46. 1995-1996
47. 1996-1997
48. 1997-1998
49. 1998-1999
50. 1999-2000
51. 2000-2001
52. 2001-2002
53. 2002-2003
54. 2003-2004
55. 2004-2005
56. 2005-2006
57. 2006-2007
58. 2007-2008
59. 2008-2009
60. 2009-2010
61. 2010-2011
62. 2011-2012
63. 2012-2013
64. 2013-2014
65. 2014-2015
66. 2015-2016
67. 2016-2017
68. 2017-2018
69. 2018-2019
70. 2019-2020
71. 2020-2021
72. 2021-2022
73. 2022-2023
74. 2023-2024
75. 2024-2025
76. 2025-2026
77. 2026-2027
78. 2027-2028
79. 2028-2029
80. 2029-2030
81. 2030-2031
82. 2031-2032
83. 2032-2033
84. 2033-2034
85. 2034-2035
86. 2035-2036
87. 2036-2037
88. 2037-2038
89. 2038-2039
90. 2039-2040
91. 2040-2041
92. 2041-2042
93. 2042-2043
94. 2043-2044
95. 2044-2045
96. 2045-2046
97. 2046-2047
98. 2047-2048
99. 2048-2049
100. 2049-2050

1. The first part of the text discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions, including sales, purchases, and expenses. It emphasizes the need for a systematic approach to record-keeping, such as using a ledger or accounting software, to ensure that all financial data is properly documented and organized.

अहम्मसीममानीहृदुःखः पापच्यते जनाः ।
 अमैदृष्टिः सर्वत्र ज्ञानदाड्ज्ञानमशिशनी ।
 वैराग्यादिमहामुख्यैः साधनैः सम्प्रवर्तते ॥

()
 अर्थ:- अहं तथा यह भैरा है इस प्रकार के अतीभमान
 से उत्पन्न दुःखों से लोग युक्त हो जाते हैं। सभी जगह
 अमैदृष्टि होती है - ही ज्ञानदायिनी तथा अज्ञान नाशिनी
 है और ऐसी बुद्धि वैराग्य आदि महामुख्य साधनों से
 प्राप्त होती है।

तदाबहुतिथे काले कस्यचित्तत्प्रापते ।
 अतीज्ञानग्रहमेतस्ति काशी विबुधदुर्लभा ॥
 एकैत जन्मना तत्र मरणावाप्सरेऽमलम् ।
 ज्ञानमुत्पद्यते जन्तोः अतिमिथे निरूपितम् ॥

()
 अर्थ:- बहुत तिथियों के बीत जाने पर किसी-किसी को
 ऐसी बुद्धि प्राप्त होती है। इसीलिये देवों के लिये दुर्लभ
 ज्ञान का घर काशी है।

किन्तु एक जन्म में ही मरण के अवसर पर काशी
 में निर्मल ज्ञान उत्पन्न होता है, ऐसा बैद्य ने कहा ५

देवेषु च यथा ब्राम्मुतीर्थे मुख्येषु काशिका ।
 व्रतेषु कादशी मुख्या पुराणेषु तथा त्विदम् ॥

()
 अर्थ:- देवताओं में जैसे शङ्कर, तीर्थों में काशी, जंतों
 में शकादशी व्रत वैसे ही पुराणों में शिव पुराण अष्ट
 है।

१. ...
 २. ...
 ३. ...
 ()

१. ...
 २. ...
 ३. ...
 ४. ...
 ५. ...

१. ...
 २. ...
 ३. ...
 ४. ...
 ()

१. ...
 २. ...
 ३. ...
 ४. ...
 ५. ...

१. ...
 २. ...
 ()

१. ...
 २. ...
 ३. ...

अल्पेन कालेन समस्तमेव साधं पुनः रुद्रपिशाचसूत्रैः ।
भवप्रसादेन कृतोपदेशः पिशाचयोगेनैव मुक्तिर्भवेति ॥

(सन्तुल्यार सं., त्रि. सं., प्र. ३०९)

अर्थ:- काशी में जो पापी मरते हैं उनके विश्वनाथ
जो कृपा करके थोड़े ही समय में भयंकर रुद्रपिशाचों
के साथ सभी को भगवान् शिव तारक भक्त का उपदेश
देते हैं । जिससे निष्पात्र योगि से भी मुक्ति मिल जाती है ।

काश्यां स्थिताहोन्द्रियाणां व्यर्थं नो ।

कुर्याद्यत्नात्सत्कृतं रक्षणी यम् ॥

(ब्र० तै० सु०, त्रि० सं. प्र. ११७)

अर्थ:- काशी में रहकर इन्द्रियों का दुरुपयोग न
करें, यत्न पूर्वक अच्छा कार्य करें तथा इन्द्रियों का
रक्षा करें ।

अविमुक्तं महाक्षेत्रं पञ्चक्रोशपरोरस्थितम् ।

येतिर्लिङ्गतदैकं हि ज्ञेयं तिर्यगेव वरागिधाम् ॥१३१॥

(का० २०. अ० २६)

अर्थ:- पञ्च नौशों में स्थित महाक्षेत्र का नाम अविमुक्त
है । जहाँ पर बिराजमान येतिर्लिङ्ग का नाम विश्वनाथ
जो है ।

गोकर्णेशः पश्चिमी पूर्वतश्च गङ्गामध्यमुत्तरं भारभूतः ।

ब्रह्मेशानो दीक्षणे सम्प्रदिएस्तन्तु प्रोक्तं भवनं विश्वभर्तुः ॥

(पद्मपुराण)

अर्थ:- गङ्गा जी के पश्चिम में गोकर्णेश तक, पूर्व में गङ्गा जी
के मध्य तक, उत्तर में भारभूतेश्वर महादेव तक, दीक्षण में
ब्रह्मेशान तक विश्वभर्ता श्री विश्वनाथ जी का भवन कहा
गया है । इसी के अन्तर्गत विश्वनाथ अन्तर्गृहीत है ।

1. *[Faint handwritten text, likely bleed-through from the reverse side]*
2. *[Faint handwritten text]*
3. *[Faint handwritten text]*

4. *[Faint handwritten text]*
5. *[Faint handwritten text]*
6. *[Faint handwritten text]*
7. *[Faint handwritten text]*

8. *[Faint handwritten text]*
9. *[Faint handwritten text]*
10. *[Faint handwritten text]*
11. *[Faint handwritten text]*

12. *[Faint handwritten text]*
13. *[Faint handwritten text]*
14. *[Faint handwritten text]*
15. *[Faint handwritten text]*

इमां चान्नां नरः कृत्वा क्षेत्रे हरिमन्मुक्तिजन्मनि ।
न दुःखैरभिभूयेत् इहामुत्रापि कुत्रचित् ॥ ७२ ॥

(काशी खण्ड अ० १००)

अर्थ:- मुक्ति जन्मस्थली काशी क्षेत्र में काशी की यात्रा करने से मनुष्य इस लोक तथा परलोक में दुःखों से पीड़ित नहीं होता । काशी की प्रदीक्षणा करने वाले को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होता । वह त्रिविधतापों से मुक्त हो जाता है ।

मन्मना गम भक्तश्च मयि सवार्चित क्रियः ।
यथा मोक्षमिहाप्नोति ह्यन्यत्र न तथा क्वचित् ॥ ६२ ॥
(मत्स्य पुराण अ० १८०)

अर्थ:- शंकर जो बोलें मुझमें मन लगाने वाला मेरा भक्त है और अपने किये हुए समस्त कर्मों को मुझे अर्पण कर दें । जैसा मोक्ष काशी में मिलता है वैसा अन्यत्र नहीं मिलता है ।

यत्किङ्कटं दृष्टवन्तौ हि नारायण पितामहौ ।
तदेव लोकं वेदे च काशीति परिगीयते ॥
(पद्म पुराण)

अर्थ:- इस किङ्कट का नारायण और ब्रह्मा ने दर्शन किया, वही लोक और वेद में काशी नाम से कहा जाता है ।

काशी प्रदीक्षणा येन कृता त्रैलोक्यपावनी ।
सप्तद्वीपा सावित्री तन्मूः परिक्रामिताऽमुना ॥ ५२ ॥
(नारद पुराण अ० ६४)

अर्थ:- जिसने काशी की परिक्रमा कर ली, उसने सात द्वीप वाली पृथ्वी समुद्र पहाड़ आदि सहित पृथ्वी की परिक्रमा कर ली है ।

येनैव हि देवेशि सर्वमन्त्र शिरोमणिम् ।
 काश्यामहं प्रदास्यामि जीवानां मुक्तिहेतवे ॥८१॥
 (ब्रह्मपुराण उत्तरार्ध अ० ३)

अर्थ:- विश्वनाथ जी कहते हैं कि हे देवेश यह सब
 मन्त्रों का शिरोमणि है। इसे ही मैं काशी में मुक्ति
 के लिये देता हूँ।

नित्यं विश्वेश विश्वेश विश्वनाथेति योजयेत् ।
 त्रिसंध्यं तं सुकृतिनं जपाम्यहमपि ध्रुवम् ॥
 (पद्मपुराण)

अर्थ:- जो नित्य विश्वेश-विश्वेश, विश्वनाथ, विश्वनाथ
 ऐसा जपता है। तीनों सन्ध्याओं में मैं भी ५ उसे
 जपता हूँ। अर्थात् संसार सागर से तार देता हूँ।

ते विशन्ति महादेवमाज्या हुतिरिवानलम् ।
 तं वै प्राप्य महादेवमीश्वराध्युषितुं शुभम् ॥८६॥
 अविमुक्तं कृतार्थोऽस्मीत्यात्मानमुपेक्ष्यते ॥
 (मत्स्यपुराण अ० १८४)

अर्थ:- वे महादेव में उसी प्रकार प्रवेश कर जाते
 हैं जैसे घी में आहुति अग्नि में प्रविष्ट कर जाती है।
 वे उन महादेव को तथा ईश्वर द्वारा अधिकृत शुभमय अवि-
 मुक्त को पाकर अपने को मैं कृतार्थ हूँ- ऐसा अनुभव
 करते हैं।

आधिव्याधिपरिक्षिप्तो द्यौरतापपरिप्लुतः ।
 मुच्यते सर्वदुःखैश्च यः स्तवस्यास्यानुकीर्तनात् ॥९८॥
 (काशीखण्ड अ० २७)

अर्थ:- आधिव्याधि से पीड़ित और व्याधि ताप से
 व्याकुल, काशी के कीर्तन मात्र से (हर हर महादेव आदि
 काशी विश्वनाथ गेय) सभी दुःखों से मुक्ति मिल
 जाती है।

~~माता पिता परित्यक्ता ये त्यक्ता निज बन्धुभिः ।
येषां क्वाडीपे गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः ॥~~

(का० खं० अ० ३२) श्लोक - ७४

अर्थ:- शिव जी कहते हैं कि माता-पिता, निज बन्धुजों द्वारा त्यागे गये हैं, जिनको कहीं गति नहीं है उनको वाराणसी में गति होती है।

अस्या परिभूता ये ये व्याधिविकल्पाकृताः ।

येषां क्वाडीपे गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः ॥ ७५ ॥

(का० खं० अ० ३२)

अर्थ:- शंकर जी कहते हैं कि जो व्यक्त ब्रह्मवस्था से पीड़ित हैं तथा व्याधियों से पीड़ित हैं जिनको कहीं गति नहीं है उनको वाराणसी में गति है।

क्व काशीयायां सुखदा प्रवृत्तिः ।

क्व पापशशी विषये प्रवृत्तिः ॥

क्व विश्वनाथानुगतिः चरपदा ।

क्व दीनमहोपसृतिः सुदुःसहा ॥

()

अर्थ:- काशी में निवास की सुख देने वाली प्रवृत्ति कहां, पाप समूह रूप सांसारिक प्रवृत्ति कहां, मोक्ष देने वाली श्री निश्चलाथ जी की सेवा कहां और असहनीय दुःख देने वाली दीन एवं मरणशील प्राणियों की संगति कहां अर्थात् काशीवास का फल सर्वोत्तम सुख देने वाला है।

~~अविमुक्तं यजन्ते तु मदभक्ताः कृतनिश्चयाः ।
न तेषां पुनरावृत्तिः कल्मषोर्विशती रीप ॥ २४ ॥~~

(मत्स्य पुराण अ० १८३)

अर्थ:- निश्चय करके मेरे भक्त काशी में यज्ञ द्वारा
कल्मषोर्विशती रीप में भी जन्म धारण नहीं करते हैं।

इन्द्रो मायाभिः पुरुरूपं द्वयत,

रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव । (ऋग्वे० ६/४७/१८)

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्या ससुपर्णा गुरुत्मान् ।
एकं सदिप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ॥

(ऋग्वे०, १/१६४/४६)

अर्थ:- परमात्मा अपनी माया शक्तियों से अनेक रूप
धारण करता है।

एत्येक व्यक्ति में परमात्मा का रूप है। अथवा
एत्येक रूप में एवेश करने परमात्मा प्रती रूप बन
गया है।

एक ही परमात्मा को इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि तथा
अग्नि पेशवाला गरुड आदि नामों से कहा जाता है।

अग्नि वेद विद् ब्राह्मण एक परमात्म तत्व को अग्नि
यम तथा मतिरिषवा आदि नामों से बहुत प्रकार
करते हैं।

तेन सा महती पुण्या चुरा रुद्र भविष्यति ।
पुण्या चोद डंगुस्त्री गङ्गा प्राची चैव सरस्वती ॥
उवडंगुस्त्री योजन द्वे गच्छेत् आह्वी नदी ।

(ब्रह्म पुराण)

अर्थ:- हे रुद्र इसी से वह बहुत बड़ी पुण्या चुरा होगी, जहाँ उत्तरमुख - उत्तरवाहिनी गङ्गा तथा पूर्व वाहिनी सरस्वती है।

जहाँ उत्तर मुख काँके बहने वाली दो योजन गङ्गा जो है।

तस्य दर्शनमात्रेण तत्त्वज्ञानविधायकम् ।
पापक्षयमवाप्नोति सर्वथा नाऽत्र संग्रहः ॥
(त्रिंशत्)

अर्थ → माणिकर्णिका कुण्ड के दर्शनमात्रेण पाप क्षय हो जाते हैं, ~~सुख~~ तत्त्व ज्ञान होता है और उसमें स्नान करने से सर्वथा पाप क्षय होता है, इसमें संग्रह नहीं है।

[Faint, illegible handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

ब्रह्मणः परमं स्थानं ब्रह्मणाद्यासितं च यत् ।
 ब्रह्मणा सेवितं नित्यं ब्रह्मणा चैव रक्षितम् ॥
 ब्रह्मा तु तत्र भगवांस्त्रिसन्ध्यं चैश्वर्ये स्थितः ।
 पुण्यात् पुण्यतमं क्षेत्रं पुण्यकृद्भिर्निर्लेखितम् ॥
 (मत्स्य पुराण)

अर्थ:- ब्रह्मा का परम स्थान ब्रह्म से अविच्छिन्न है ।
 ब्रह्म से सेवित तथा ब्रह्म से रक्षित यह स्थल काशी
 है । भगवान् ब्रह्मा तीनों काल ईश्वर भगवान् शंकर
 में विराजमान हैं, अतः पवित्र से पवित्रतम यह
 क्षेत्र पुण्यात्माओं से सेवित है ।

नादन्यत्पश्यामि जन्तूनां मुक्त्वा वाराणसीं पुरीम् ।
 सर्वपापप्रशमनीं प्रायश्चित्तं कर्तुं युगे ॥ ४० ॥
 (का० खं० अ० ६४)

अर्थ:- ब्रह्मण कर्तिकेय जी से बोले- वाराणसी पुरी
 को छोड़कर जीवों के सभी पापों को नष्ट करने का
 अन्य कोई भी प्रायश्चित्त मैं नहीं देख रहा हूँ । इस
 कर्तिककाल में सभी पापों को नष्ट करने के लिये एक
 मात्र काशीवास ही प्रायश्चित्त है ।

सत्यं शौचमीहंसा च क्षान्तिर्दानं दया दमः ।
 अस्तेयमिन्द्रियाक्रोचः सर्वेषां धर्मसाधनम् ॥ ४१ ॥
 (का० खं० अ० ४०)

अर्थ:- सत्य, शौच, अहिंसा, शान्ति, दान, दया, दम,
 चोरी न करना, इन्द्रियों को वस में रखना ये
 सभी के लिये धर्म का साधन हैं ।

काश्
सं
सं
(ह

अ
स
न

की
मि

अ
न

५/२

काश्यां श्रीदेवदेवस्य विश्वनाथस्य पूजनम् ।

सर्वपापहरं पुंसामनन्ताभ्युदयावहम् ॥

संसारदावग्निदग्ध जीवभीरुहजीवनम् ।

दुःखार्णवीद्यपतित प्राणिनिर्वाणकारणम् ॥

(शिव वृण)

अर्थ:- काशी में देवादिदेव श्री विश्वनाथ जी का पूजा समस्त पापों को अपहरण करने वाला तथा मनुष्यों के अभ्युदय कारक है ।

संसार रूपी दावाग्नि से दग्ध जीव रूपी वृक्षों को जीवित करने वाला एवं दुःख रूपी सागर में गिरे हुये प्राणियों के उद्धारक है ।

अष्टाङ्गयोगाभ्यासेन यत्पुण्यं जीयते ।

तत्पुण्यं साधकं भूयाच्छ्रद्धा काशीनिषेवणात् ॥ ८५ ॥

(का० खं० अ० २६)

अर्थ:- अष्टांग योगाभ्यास से जो पुण्य प्राप्त होता है, उसे अधिक पुण्य अर्द्धा से काशी सेवन से होता है ।

चतुर्णामपि वेदानां पुण्यमध्ययनाच्च यत् ।

तत्पुण्यं जायतां काश्यां गायत्री लक्षजाप्यतः ॥ ८६ ॥

(का० खं० अ० २६)

अर्थ:- चारों वेदों के अध्ययन से जो पुण्य प्राप्त होता है, वही पुण्य काशी में एक लाख गायत्री के जपने से प्राप्त हो जाता है ।

[Faint, illegible handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

जन्मान्तरं सहस्रेत्रेण मोक्षोऽन्यत्राप्येत न वा ।
 एतेन जन्मना मोक्षः कृत्तिवासोऽत्र लभ्यते ॥
 (कूर्म पुराण)

अर्थ:- हजारों जन्मों के बाद अन्यत्र मोक्ष मिले
 या नहीं इसमें संदेह है, किन्तु इस कृत्तिवास भगवा
 शिव के स्थान काशी में एक ही जन्म में मोक्ष
 असम्भावी है।

इत्याद्याः कौटिसंख्याश्च मुनयो दीर्घदीर्घिनः ।
 भस्मोद्धूतित सर्वाङ्गानि पुण्ड्राङ्गितमस्तकाः ॥ ११ ॥
 (काशी सूतारहस्य) अ० १

अर्थ:- शिवयोगी मानधाता से कहते हैं कि काशी में
 महर्षि और दीर्घ दीर्घी मुनि कौटिली के संख्या में
 वे सब भस्म से लिपटे हुए देह वाले त्रिपुण्ड्र धा
 रण करते हैं।

रुद्राक्षमालाभरणाः पञ्चाक्षरपरायणाः ।
 शिवागमरहस्यानि श्रुतीश्चैव व्यचारयन् ॥ १२ ॥
 (काशी सूतारहस्य अ० १)

अर्थ:- रुद्राक्ष की माला धारण किये हुए पञ्चाक्षर
 मन्त्र का जप करते हुए, शिवागम रहस्य का वेद
 के साथ तुलनात्मक विचार करते हुए निवास
 करते हैं।

पञ्चाक्षरं हृदि ध्यायन् + रुद्राध्यायजपादृती ।
 शिवयोगीः सन्निधिं गत्वा सम्प्रणम्य स्तुवनं हृदा
 ()

अर्थ:- पञ्चाक्षर को हृदय में ध्यान करता हुआ रुद्राक्ष
 की माला पहन कर शिवा और शिव के सन्निधि
 जाकर प्रणाम करे और हृदय से स्तुति करे।



पुरी वैश्वेश्वरीरूपाप्तो मनः स्वस्थमवाप च ।
ततः प्रापद्य तां काशीं ताणसः क्वाप्यातर्कितम् ॥ ५५ ॥

(का० खं० अ० ८६)

अर्थ:- विश्वेश्वर को यह पुरी काशी मुझे प्राप्त हुई
अतः मन भी स्वस्थ हो गया। अतः काशी में कुछ
अतर्कित अचिन्त्य हो पुण्य प्राप्त होता है।

येन काश्यां स म भ्यर्चि येन काश्यां प्रतिष्ठितम् ।

येन काश्यां स्तुतं लिङ्गं समैरुपाशदपिणः ॥ ८६ ॥

तत्त्वं स्वच्छोऽसि मुकुरो ममैत्रयस्य हि ।

काश्यां लिङ्गार्चनात्वाष्ट्रवरं वरय सुव्रत ॥ ८८ ॥

काश्यां यो राजधान्यां मे दित्वा भाग्न्यमर्चयेत् ॥ ८९ ॥

(का० खं० अ० ८६)

अर्थ:- विष्णुनाथ जी कहते हैं कि जिसने काशी में लिङ्ग
की पूजा की है, जिसने काशी में लिङ्ग की प्रतिष्ठा
की है, जिसने काशी में उनकी स्तुति की है, वह मेरे
तीनों नेत्रों के लिये स्वच्छ दर्पण है। काशी में लिङ्ग
चीन से मगौरथ की उक्ति द्युत है। मेरी राजधानी
में मेरी उपासना होकर अन्त की अर्चना व्यर्थ
ही है।

संसारभयाने मुक्ताः सर्वे पापान् भोजन्ताः ।

सुरेव न मोक्षमायान्ति यथा सुकृतिनस्तथा ॥

ज्ञात्वा कलियुगं घोरमप्रकाशं कृतं मया ॥

(लिङ्ग पुराण)

अर्थ:- भ्रूंकर् जी कहते हैं कि संसार के भय से मुक्त
सभी पापों से रहित पुण्यात्मा के पास सुख पूर्वक
मोक्ष आता है। चूंकि घोर कलियुग की जानकारी
इस काशी की मैंने सुना रखी है।



यः स्नात्वा न्तर वह्न्यां याति विश्वेष्वा दक्षिणे ।
अद्वया परया तस्य अयसोन्तो न विद्यते ॥८७॥
(का० खं० अ० ३)

अर्थ:- काशी में जो उत्तरवह्नी गङ्गा जो में
स्नान करके परम अद्वैत से विश्वनाथ जो का दक्षिण
काता है, वह अनन्त अयस को प्राप्त होता है।

हरकाशी हर काशी काशी काशी हर हर ।
शिव काशी शिव काशी काशी काशी शिव शिव ॥
()

अर्थ:- शिव ही काशी है, शिव ही काशी है। काशी
शिव है काशी शिव है।

यत्सुरवं काशीवासिद्वयं न तत्त्वस्याण्डमण्डये ।
अस्ति चैतकथं सर्वे काशीवासिभिलाषुका ॥८८॥
(का० खं० अ० ३)

अर्थ:- काशीवास में जो सुरुव है वह पञ्चाण्डतत्व में नहीं
है। यदि है तो सभी काशीवासियों की कामना क्यों
करते हैं।

संसारभयनिमुक्ताः सर्वेषामिवर्जिताः ।
सुरेन मोक्षमायान्ति यथा सुकृतिनस्तथा ॥
ज्ञात्वा कलियुगं चौरमप्रकाशयं कृतं मया ॥
(लिङ्ग पुराण)

अर्थ:- सांकर जो कहते हैं कि संसार के भय से मुक्त
सभी पापों से रहित पुण्यात्मा के पास सुरुव पूर्वक
मोक्ष आता है। चूंकि चौर कलियुग जो जानकर
इस काशी को मैंने छुटा रखा है।



कल में काशी ही समस्त जगत् का प्राथमिक-रूप
स्वरूप है ।

वाशणसी तु भुवनत्रयं सारं भूतारम्भा
नृणां सुखदुःखं क्लेशैश्च समाप्ता ।
अत्रात्रा विविदा दुष्करं कारिणीऽपि ,
पापक्षयं विरजसः सुमनः प्रकाशा ॥
(नारद पुराण)

अर्थ :- वाशणसी पुरी तीनों लोकों का सारभूत
है । अनेक प्रकार के दुष्कर्म करनेवाले भी
काशी में आकर पवित्र हो जाते हैं, उनका
गन निर्मल हो जाता है ।

ब्राह्मणः क्षत्रिया वैश्याः शुद्रा वै वर्णशङ्कराः ।
हिरण्यं मल्लिच्छाश्च ये चाण्डाले संकीर्णाः पापयोगिनः ॥
कीटाः पिपीलिकाश्चैव ये चाण्डाले गृहा पक्षिणः ।
चण्डाश्च मौक्तिकिनः सर्वे ललाटाक्षं वृषद्वजराः ।
शिवे गग पुरी देवि जायते नात्र संशयः ॥
(कूर्म पुराण १।३१।३१।३२)

अर्थ :- विष्णुनाथ जी अन्नपूर्णा जी से कहते हैं,
अन्नपूर्णा, कश्यप, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, वर्ण-
शंकर, स्त्री, मल्लिच्छ और दूसरे संकीर्ण पापयोगि-
लोग कीट, चींटी, पशु, गृह एवं पक्षी काशी
में शरीर छोड़ने से चण्डमौलि शिव जी के
ललाटाक्षं वृषद्वज्र शिवरूप में हो जाते हैं,
इसमें कोई संदेह नहीं है ।



काशिका सकल तीर्थ सेविता,
 काशिका सकल देव पूजिता ।
 काशिका सकल शास्त्र रक्षिता,
 काशिका परम पद प्रकाशिका ॥

वर्ण — यह काशी समस्त तीर्थों से सेविता है । काशी
 समस्त देवों से पूजिता है, काशी समस्त
 शास्त्रों से वर्णित है, तथा काशी परम पद
 की प्रकाशिका है ।
 स्कन्द जी आशुतोष हृषि से

गङ्गापातकिनी देवि ! ये त्रेमयः पापकृत्तमाः ।
 वाराणसी समासाद्य ते भक्ति परमां गतिम् ॥
 (पद्म पुराण आ० ३३ ब्रह्मोक्त ५३)

अर्थ :- हे देवि जो गङ्गापातकी हैं जो उनसे भी
 बढ़कर हैं वे काशी (वाराणसी) प्राप्त कर
 परम गति प्राप्त करते हैं ।

परं शुद्धात्मं क्षेत्रं मम वाराणसी पुरी ।
 सर्वेषामेव भूतानां संसारार्णवगिरिणी ॥
 (पद्म पुराण स्कन्द उवण्ड आ० ३३ ब्रह्मोक्त ६)

अर्थ — भुविर्गच्छत नै नारद जी से पूछा कि
 वाराणसी का विस्तृत महात्मा कहे नारद जी
 ने ईश्वर देवी सम्बाद से इसी विषय पर
 जो कहा वह सुना — हे पवित्री मेरी काशी
 (वाराणसी) पुरी आत्पवन शुद्ध क्षेत्र है । यह
 संसार के समस्त जीवों की संसार सागर से पार
 करती है ।

स

घ

बहु जन्म श्रावणमासी होगी मुच्यते वा न वा ।
 मृत मासोऽपि मुच्यते काश्यागौकेन जन्मना ॥
 (काशी स्तुत)

टी:- बहुत से सैकड़ों जन्मों के अमास से भी
 योगी की मुक्ति मिले या न मिले, किन्तु काशी
 में मृत मात्र से एक ही जन्म में मुक्ति
 मिल जाती है ।

द्वयं जपं हुं चैष्टं तत्तत्पुं कुरु च यत् ।
 दधानमद्य यनं ज्ञानं सर्व तत्राद्यं भवेत् ॥
 (कर्म पु० १।३१।३६)

:- काशी में किया हुआ दान, जप, हवन, यज्ञ,

अथवा यत्कृतं पापं तत्काशां परमं पौरुषार्थम्,
 नाद्वयत्पश्चात् जन्तूनां मुक्त्वा वाशेषीम् पुरीम् ।
 सर्वपाप प्रशमनी प्रापश्चिच्छतं कलौ भुजे ॥
 (स्क० पु० का० उव० ४)

टी:- अन्य स्थानों में किया गये पाप काशी में
 नष्ट हो जाते हैं ।
 काशी पुरी को छोड़कर समस्त पाप नष्ट करने
 वाली दुसरी कीर्ति वस्तु नहीं देख पड़ती है ।



दान

कलौ विश्वेश्वर देवः कलौ वाराणसी पुरी ।
कलौ मागीरधी गङ्गा दानं कलिभुगे महत् ॥

(काशीखण्ड)

अर्थ → कलिभुग में देवता विश्वेश्वर हैं,
कलिभुग में पुरी वाराणसी है, कलिभुग
में गंगा मागीरधी है और कलिभुग
में दान ही महत् है ।

दानान्यपि स्वस्व विज्ञानुसारेण कृतानि वै ।
दूर्वा पत्रं पुष्पजातं शिवेर्दणितं ममोद्य कृत ॥
[काशी भूमरहस्य, अ०-१४]

अर्थ → अपने-अपने शक्ति के अनुसार
(सम्पत्ति-अनुसार) प्रतिदिन दान करें ।
— चूंकि दूर्वापत्र, पुष्प आदि वस्तु शिवार्पण
करने से उमोद्य फल होकर प्राप्त होता है ।

काश्यामन्नप्रदनादि दानान्यद्यहराणि वै ॥
[काशी मू०, अ०-२१, श्लो०-८६]

अर्थ → काशी में अन्न-दान करने
पाप नष्ट होता है ।

तत्र दत्त्वा महादानं तत्र कृत्वा महद्व्रतम् ।
तत्राद्यित्यारिषमं वैदं च्यवते न नरो दिवः ॥
(काशीखण्ड)

(कृष्णचन्द्रिका)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible][illegible]

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
(३५-१९९९-१९९९ श्री गणेशाय नमः)

$\frac{1}{2} \times 1000 = 500$

1. उत्तर प्रदेश का क्षेत्रफल 243,290 वर्ग कि.मी.
2. उत्तर प्रदेश का क्षेत्रफल 243,290 वर्ग कि.मी.
(उत्तर प्रदेश का क्षेत्रफल)

दान

अर्थ → काशी अविमुक्त नामक दूध
क्षेत्र में महादान देकर महाप्रत कर तथा
समस्त वैदों को पढ़कर मनुष्य स्वर्ग
से नहीं गिरता ।

प्रातः सप्तर्षि मामभक्त्या भोजयित्वा द्विजानपि ।
दत्त्वा गाः काञ्चनमूमिं न भूयो मूमि माग भवेत् ॥

(काशी खण्ड, अ०-६१)

अर्थ → ~~विष्णु~~ विष्णु जी वैसे
विन्दु माध्य पञ्चगङ्गा में स्नान करके
प्रातः मेरी पूजा कर भक्ति से मेरी पूजा
कर. ब्राह्मणों को भोजन कराकर सुवर्ण
गौ तथा मूमि दान देने वाला व्यक्ति
पुनः पृथ्वी पर जन्म नहीं लेता ।

॥ नैवेद्यं न जायते भूयः संसारं दुःख संकटम् ॥
दीर्घायुष्टयवासा मिज्ञानं पुस्तकं दानतः ।
अन्नदानेन सम्पत्तिं कीर्तिं कन्या पदानतः ॥
(का० खं०, अ० २६, श्लो०-१११)

अर्थ → मनुष्य संसार में दुःख संकट
का भागी नहीं होता है। व्यक्ति वस्तु दान
से दीर्घायु पुस्तक दान से ज्ञान, अन्न-
दान से सम्पत्तिवासी, कन्यादान से
कीर्ति प्राप्त करता है ।

दात महाराज

~~रानीता प्रज्ञा चोपरा~~

दत्वादाजानि मुरीणिमखाग निवठानु मू ।
(का० खं०, ३१०-२४ ।)

अर्थात् → जिन्होंने काशी में अनेकों में
उनका प्रकार के दान दिये हैं, उन्होंने
माना बहुत सा यज्ञ सम्पादित किया है।

पाराणसी जा ह्वीम्यां संगमै लोक विधुते ।
देत्वादानं च विद्वानेन न स मूढोऽभिजायते ॥

अर्थ → संसार परिलब्ध ~~परलोक~~ ^(विष्णु पुराण) वारेणसी
गंगा के संगम में ८३ असी घाट पर और वरुणा
संगम आदि के ~~व~~ ^१ ४ विधि पूजा अंग-
दान करने से पुनर्जन्म वाही होता है।

१३१
 १३२
 १३३
 १३४
 १३५
 १३६
 १३७
 १३८
 १३९
 १४०

१४१
 १४२
 १४३
 १४४
 १४५
 १४६
 १४७
 १४८
 १४९
 १५०

१५१
 १५२
 १५३
 १५४
 १५५
 १५६
 १५७
 १५८
 १५९
 १६०

दान माहात्म्य

~~देवता श्रद्धाघोष~~

देवादाजानि मुरीणिमखान निवृत्तु भू ।

(क।० खं०, ३।०-२४ ।)

अर्थात् → जिन्होंने काशी में अनेकों में
अनेकों प्रकार के दान दिये हैं, उन्होंने
माना बहुत सा यज्ञ सम्पादित किया है।

वारणसी जाह्नवीभ्यां संगमे लोक विद्यते ।
देवादानं च विद्वानेन न स मूढोऽभिजायते ॥

(विष्णु पुराण) वारणसी
अर्थात् → संसार परिसिद्ध ~~वारणसी~~ ~~उरसी~~
गंगा के संगम में (उरसी घाट पर) और वारणा
संगम आदि के ~~में~~ ७ विधि पूर्वक अन्न-
दान करने से पुनर्जन्म वाही होता है।

1. 15-18-19-20-21-22-23-24-25-26-27-28-29-30-31-32-33-34-35-36-37-38-39-40-41-42-43-44-45-46-47-48-49-50-51-52-53-54-55-56-57-58-59-60-61-62-63-64-65-66-67-68-69-70-71-72-73-74-75-76-77-78-79-80-81-82-83-84-85-86-87-88-89-90-91-92-93-94-95-96-97-98-99-100

1. 15-18-19-20-21-22-23-24-25-26-27-28-29-30-31-32-33-34-35-36-37-38-39-40-41-42-43-44-45-46-47-48-49-50-51-52-53-54-55-56-57-58-59-60-61-62-63-64-65-66-67-68-69-70-71-72-73-74-75-76-77-78-79-80-81-82-83-84-85-86-87-88-89-90-91-92-93-94-95-96-97-98-99-100

1. 15-18-19-20-21-22-23-24-25-26-27-28-29-30-31-32-33-34-35-36-37-38-39-40-41-42-43-44-45-46-47-48-49-50-51-52-53-54-55-56-57-58-59-60-61-62-63-64-65-66-67-68-69-70-71-72-73-74-75-76-77-78-79-80-81-82-83-84-85-86-87-88-89-90-91-92-93-94-95-96-97-98-99-100

पापतापभिरपानां भूतानामिह जाह्नवी ।
पापतापहराय द्वेष्टुं जान्थ तथा कलौ ॥

(काशीखण्ड, अ० - २२)

अर्थ → कलिभुग में गंडुा के सदृश पाप-
ताप से अभितप्त मनुष्यों के लिये गंडुा
से बढकर दूसरा नहीं है ।

" स्वर्गदा सर्व जन्तूनां महापातकिनामपि "

(का० खं० अ० - २२)

अर्थ = गंडुा महापातकियों को भी
स्वर्ग देने वाली है ।

गंडुायां स्नाति यो मर्त्यो यावज्जीवं दिनें दिनें ।
जीवन्मुक्तः सविज्ञो देहान्ते मुक्त एव सः ॥

(का० खं०, अ० - २६)

अर्थ → गंडुाजी में प्रतिदिन ० स्नान करने
वाले व्यक्ति को जीवन्मुक्त जानना
चाहिए । मरने पर तो वह मुक्त है ही ।

तिथि नक्षत्र पूर्वादिनां पक्ष्यं जाह्नवी जले ।
स्नानमात्रेण गंडुायां सञ्चिताद्य विनश्यति ॥

(का० खं०, अ० - २६)

अर्थ → तिथि, नक्षत्र, पक्ष आदि की अपेक्षा
करके गंडुाजी के जल में स्नान मात्र से
व्यक्ति जीवन-कृत सञ्चित पापों से मुक्त
हो जाता है ।

1. बिड़ाल ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ
॥ ठाँव ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ
(१६-०६-००००)

ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ
ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ
॥ ठाँव ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ

ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ
(१६-०६-००००)
॥ ठाँव ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ
॥ ठाँव ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ

ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ
ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ
(१६-०६-००००)

ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ
ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ
॥ ठाँव ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ

ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ
ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ
(१६-०६-००००)

ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ
ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ
॥ ठाँव ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ ठाँवनाहूँ

~~महाभारत भाष्य~~ गङ्गा माहात्म्य

कृमिकीट पतङ्गाद्या ये मृता जाह्नवी तटे ।
कुलात् पतन्ति ते वृक्षादप्येवमपि भवन्ति परांगतिम् ॥
(का० खं०, अ०-२६, १३४ ब०)

अर्थ — कृमिकीट, पतंग जी भी- ब गङ्गाजी में
मरते हैं, तब के वृक्षां से जी पत्त
गिरते हैं सभी मोक्ष प्राप्त करते हैं।

ज्येष्ठ मासि स्निग्धे पक्षे दशम्यां हस्तसंयुते ।
गङ्गा तीरे तु पुरुषो नारी वा भक्तिभावतः ॥
(का० खं०, अ०-२६, १३५)

अर्थ → ज्येष्ठ महिने में शुक्ल हस्त
पक्षत्र भुक्त दशमी को गङ्गा जी में जी
पुरुष, स्त्री भक्ति भाव से स्नान करता
है, वह भी भुक्त हो जाते हैं।

कूपवापी तद्गङ्गादि प्रपासद्यादिमिस्तथा ।
ऐन्याप्र भूवेत्पुण्यं तद्गङ्गा दर्शनाद्भवैत् ॥
(का० खं०, अ०-२६)

अर्थ → कूप, वावणी, तीरवरा, पवसरा
प्रशादि करने से जी पुण्य होता है,
वह पुण्य गङ्गा के दर्शन मात्र
से होता है।

1. इन विद्यालयों में प्रवेश करने वाले छात्रों को
प्रवेश परीक्षा देनी होगी। (25-05-2020)

विद्यार्थियों को 11/5 को प्रवेश देना होगा - विद्यार्थी
को 10 को प्रवेश देना होगा। (25-05-2020)

1. प्रवेश परीक्षा के लिए छात्रों को प्रवेश देना होगा -
विद्यार्थियों को 10 को प्रवेश देना होगा। (25-05-2020)

प्रवेश परीक्षा के लिए छात्रों को प्रवेश देना होगा - विद्यार्थी
को 10 को प्रवेश देना होगा। (25-05-2020)

1. प्रवेश परीक्षा के लिए छात्रों को प्रवेश देना होगा -
विद्यार्थियों को 10 को प्रवेश देना होगा। (25-05-2020)

प्रवेश परीक्षा के लिए छात्रों को प्रवेश देना होगा - विद्यार्थी
को 10 को प्रवेश देना होगा। (25-05-2020)

जिष्णायां जागरं कर्माद् गङ्गा देवा पि चै हरैः ।
 पुष्पैः सुगन्धैर्मै वैद्यैः फलैर्दशदशान्भितैः ॥
 (का० शं०, ३।०-२६, २०।०-१३६)

अर्थ → इस शक्ति में जागरण करना चाहिए
 है हरै । दश प्रकार के पुष्पों सुगन्धित
 फल, वैद्यों से गंगा की पूजा करनी
 चाहिए ।

अन्यत्र भटकृतं कर्मवृत्तं दानं जपस्तपः ।
 गङ्गातटे तु सर्वस्वं हरैः कौटिल्युणं भवितु ॥
 (का० शं०, ३।०-२६, २०।०-११२)

अर्थ → है हरै ! अन्यत्र किया गया कर्म
 वृत्त, दान, जप, तप, भी गंगा-तट पर
 करने से कौटिल्युण फल का भागी
 होता है ।

जन्मद्वै त कृते स्नाने गङ्गायां भक्तिपूर्वकम् ।
 जन्मप्रभृति पापैश्चाटसञ्चितान्मुच्यते क्षणात् ॥
 (का० शं०, ३।०-२६, २०।०-११२)

अर्थ → जन्मद्वारा भी
 भक्ति पूर्वक गङ्गा स्नान करने पर जन्म से
 संचित पाप से तत्क्षण मुक्ति मिलती है ।

१. $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$
 $\frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$
 $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^2} = -\frac{2}{x^3}$
 २. $\frac{1}{x^3} = x^{-3}$
 $\frac{d}{dx} x^{-3} = -3x^{-4} = -\frac{3}{x^4}$
 $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^3} = -\frac{3}{x^4}$
 ३. $\frac{1}{x^4} = x^{-4}$
 $\frac{d}{dx} x^{-4} = -4x^{-5} = -\frac{4}{x^5}$
 $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^4} = -\frac{4}{x^5}$
 ४. $\frac{1}{x^5} = x^{-5}$
 $\frac{d}{dx} x^{-5} = -5x^{-6} = -\frac{5}{x^6}$
 $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^5} = -\frac{5}{x^6}$
 ५. $\frac{1}{x^6} = x^{-6}$
 $\frac{d}{dx} x^{-6} = -6x^{-7} = -\frac{6}{x^7}$
 $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^6} = -\frac{6}{x^7}$
 ६. $\frac{1}{x^7} = x^{-7}$
 $\frac{d}{dx} x^{-7} = -7x^{-8} = -\frac{7}{x^8}$
 $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^7} = -\frac{7}{x^8}$
 ७. $\frac{1}{x^8} = x^{-8}$
 $\frac{d}{dx} x^{-8} = -8x^{-9} = -\frac{8}{x^9}$
 $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^8} = -\frac{8}{x^9}$
 ८. $\frac{1}{x^9} = x^{-9}$
 $\frac{d}{dx} x^{-9} = -9x^{-10} = -\frac{9}{x^{10}}$
 $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^9} = -\frac{9}{x^{10}}$
 ९. $\frac{1}{x^{10}} = x^{-10}$
 $\frac{d}{dx} x^{-10} = -10x^{-11} = -\frac{10}{x^{11}}$
 $\frac{d}{dx} \frac{1}{x^{10}} = -\frac{10}{x^{11}}$

1. प्रमाणित किताबें, नक़्क़ा, खर्च
2. प्रमाणित किताबें, नक़्क़ा, खर्च
3. प्रमाणित किताबें, नक़्क़ा, खर्च

[illegible]

1. संस्कृत में संज्ञा कि विभक्ति
 2. संज्ञा कि विभक्ति कि संज्ञा
 3. संज्ञा कि विभक्ति कि संज्ञा

10. संज्ञा
 11. संज्ञा
 12. संज्ञा
 13. संज्ञा
 14. संज्ञा
 15. संज्ञा
 16. संज्ञा
 17. संज्ञा
 18. संज्ञा
 19. संज्ञा
 20. संज्ञा

वैशाख कार्तिक माघ गंगा स्नानं सदर्शनम् ।
दर्शनं शतगुणं पुण्यं संक्रान्तौ च सहस्रकम् ॥
(का० खं०, ३१०-२६, शत०-१२८)

अर्थ → वैशाख कार्तिक, माघ के महीने में गंगा स्नान दुर्लभ है । अभावश्या में शतगुण पुण्य तथा संक्रान्ति में हजार गुण पुण्य होता है ।

श्रद्धया भक्ति युक्तस्तु गंगं स्नात्वा विद्यानतः ।
ब्रह्महाडपि विशुद्ध्यते किं पुनस्त्वन्धपातकी ॥
(का० खं०, ३१०-२६, शत०-१३३)

अर्थ → विधि पूर्वक श्रद्धा भक्ति युक्त गंगा में स्नान करने से ब्रह्महत्या भी शुद्ध हो जाता है । अन्ध पातकी की क्या बात है ?

कीदृशी सा महा गङ्गा साक्षाच्छम्भुस्वरूपिणी ।
भस्या दर्शनतो मुक्तिर्न जाने स्नानजे फलम् ॥
(का० मू०)

अर्थ → साक्षात् भगवान् शिव की स्वरूप गंगा जी को महत्व कितना है । जिसके दर्शन से मुक्ति मिल जाती है तो फिर स्नान करने से कितनी मुक्ति मिलेगी में नहीं जानता ।

CHANDRA BHAIJI

[illegible]

1895-1896

[illegible]

1. $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$
 $\frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$

1. If the number is 1000, then the number is 1000.
 2. If the number is 1000, then the number is 1000.
 3. If the number is 1000, then the number is 1000.
 4. If the number is 1000, then the number is 1000.
 5. If the number is 1000, then the number is 1000.
 6. If the number is 1000, then the number is 1000.
 7. If the number is 1000, then the number is 1000.
 8. If the number is 1000, then the number is 1000.
 9. If the number is 1000, then the number is 1000.
 10. If the number is 1000, then the number is 1000.